Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 3.4 September-October 2025 / VOL -02 ISSUE-II

18

21वीं सदी में भारतीय ज्ञान परम्परा का महत्त्व

राजेश्वरी विजय
शोधार्थी
जय मीनेश आदिवासी विश्वविद्यालय, रानपुर कोटा

डॉ. नमिता गोस्वामी
मार्गदर्शक, सहायक प्राध्यापक विभागाध्यक्ष
जय मीनेश आदिवासी विश्वविद्यालय, रानपुर कोटा

प्रस्तावना

भारत को 'विश्वगुरु' कहा गया है क्योंकि यहाँ की संस्कृति और ज्ञान–परम्परा ने विश्व को न केवल ज्ञान, बल्कि जीवन जीने की दिशा दी है। भारत की सभ्यता लगभग पाँच हजार वर्षों से भी अधिक पुरानी है, जिसने विज्ञान, दर्शन, गणित, चिकित्सा, कला, समाजशास्त्र और अध्यात्म – प्रत्येक क्षेत्र में अद्वितीय योगदान दिया है। भारतीय सभ्यता विश्व की सबसे प्राचीन सभ्यताओं में से एक है, जिसकी जड़ें लगभग पाँच हजार वर्ष पूर्व तक जाती हैं। भारत ने न केवल आध्यात्मिक चिंतन में बल्कि विज्ञान, गणित, चिकित्सा, दर्शन, कला, राजनीति, समाजशास्त्र और भाषाविज्ञान जैसे विविध क्षेत्रों में विश्व को ज्ञान दिया है। इस दीर्घकालीन परम्परा को भारतीय ज्ञान–परम्परा (Indian Knowledge Tradition) कहा जाता है। भारतीय ज्ञान–परम्परा केवल पुस्तकीय ज्ञान नहीं, बल्कि अनुभव, आचरण और मूल्य–निष्ठा पर आधारित समग्र दृष्टि है। 21वीं सदी में जब संसार तकनीकी प्रगति और भौतिकता में उलझा हुआ है, तब भारतीय ज्ञान–परम्परा जीवन–मूल्यों, नैतिकता और पर्यावरणीय संतुलन की राह दिखाती है। 21वीं सदी में जब विश्व "सूचना–युग" में प्रवेश कर चुका है, तब यह प्रश्न स्वाभाविक है कि क्या भारतीय ज्ञान–परम्परा आज भी प्रासंगिक है? इसका उत्तर है – हाँ, अत्यन्त प्रासंगिक है, क्योंकि यह परम्परा केवल सूचना नहीं, बल्कि "जीवन–दर्शन" सिखाती है।

भारतीय ज्ञान–परम्परा का अर्थ

'ज्ञान–परम्परा' शब्द दो भागों से मिलकर बना है – ज्ञान और परम्परा।

ज्ञान का अर्थ है – सत्य का अनुभव, विवेक और बुद्धि से प्राप्त चेतना।

परम्परा का अर्थ है – वह प्रवाह जो पीढ़ी दर पीढ़ी चलता आया है।

अतः भारतीय ज्ञान–परम्परा का अर्थ है –

"वह सतत् बौद्धिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक धारा जो प्राचीन काल से लेकर आज तक भारतीय समाज के विकास का आधार रही है।"

यह परम्परा वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत, बौद्ध–जैन ग्रंथों, योग, आयुर्वेद, गणित, खगोल, शिल्प और नाट्यशास्त्र तक फैली हुई है।

"भारत में प्राचीन काल से आज तक चली आ रही वह बौद्धिक और सांस्कृतिक धारा, जिसने मानव–जीवन के प्रत्येक आयाम को ज्ञान, मूल्य और अनुभव के आधार पर संयोजित किया।"

परिभाषाएँ

- डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के अनुसार : "भारतीय ज्ञान–परम्परा वह सतत् प्रवाह है जो मानव को आत्म–साक्षात्कार की ओर ले जाता है।"
- स्वामी विवेकानन्द ने कहा : "ज्ञान तभी सार्थक है जब वह मनुष्य को सेवा, त्याग और आत्म–बल की दिशा दे।"
- डॉ. नीलम यादव (भारतीय ज्ञान–परम्परा : विविध आयाम) के अनुसार : "भारतीय ज्ञान–परम्परा वैज्ञानिक और नैतिक दृष्टि का ऐसा संगम है जो भौतिक और आध्यात्मिक दोनों पक्षों को संतुलित रखता है।"

भारतीय ज्ञान–परम्परा के प्रमुख आयाम और उदाहरण

(क) दार्शनिक और आध्यात्मिक आयाम

भारत में ज्ञान की शुरुआत 'सत्य की खोज' से हुई।

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 3.4 September-October 2025 / VOL -02 ISSUE-II

वेद और उपनिषद में "एकोऽहम् बहुस्याम" तथा "अहं ब्रह्मास्मि" जैसे सूत्रों ने मानव और ब्रह्म के एकत्व का बोध कराया।

गीता ने कर्म, ज्ञान और भक्ति–योग के माध्यम से संतुलित जीवन का मार्ग दिखाया।

21वीं सदी में जब जीवन तनावग्रस्त है, तब योग और ध्यान की यह परम्परा मानसिक स्वास्थ्य का सर्वोत्तम उपाय बन चुकी है।

(ख) वैज्ञानिक और गणितीय आयाम

भारतीय विद्वानों ने विज्ञान और गणित को गहन अनुभव से जोड़ा। आर्यभट ने 'शून्य' और 'दशमलव पद्धति' की खोज की। भास्कराचार्य ने 'लीलावती' में बीजगणित के नियम बताए। सुश्रुत और चरक ने चिकित्सा–विज्ञान को व्यवस्थित रूप दिया। नागार्जुन ने धातु–विज्ञान और रसायन–शास्त्र को नया आयाम दिया।

उदाहरण :

सुश्रुत का "शल्य–चिकित्सा" ग्रंथ आधुनिक सर्जरी का आधार है।

आर्यभट का 'आर्यभटीय' आज भी गणित की नींव में शामिल है।

सांस्कृतिक और कलात्मक आयाम

भारतीय ज्ञान–परम्परा ने जीवन को कला से जोड़ा। भरतमुनि का नाट्यशास्त्र, वास्तुशास्त्र, संगीतशास्त्र, और चित्रकला सभी का आधार वैदिक दृष्टि पर है। "सत्य, शिव, सुंदर" का सिद्धांत भारतीय सौंदर्यशास्त्र का मूल रहा है।

उदाहरण : अजंता–एलोरा, खजुराहो की मूर्तियाँ और नटराज की प्रतिमा – यह ज्ञान और कला के अद्भुत समन्वय का प्रतीक हैं।

नैतिक और मूल्यपरक आयाम

सत्य, अहिंसा, करुणा, संयम, कर्तव्य और आत्म–संयम जैसे मूल्य इस परम्परा के आधार हैं।

आज के युग में जब भौतिकता बढ़ रही है, तब ये मूल्य जीवन को दिशा देते हैं।

21वीं सदी में भारतीय ज्ञान–परम्परा की प्रासंगिकता

(क) पर्यावरण और सतत् विकास –भारतीय परम्परा "प्रकृति–पुरुष" के संतुलन की बात करती है – जो आज के जलवायु संकट में अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो रही है। "पृथ्वी माता" की अवधारणा पर्यावरणीय दृष्टि से अनुकरणीय है।

(ख) वैश्विक परिप्रेक्ष्य– विश्व आज भारत के योग–दर्शन, ध्यान, अध्यात्म और शांति–विचार से प्रेरणा ले रहा है।

"मेक इन इंडिया" के साथ–साथ "थिंक लाइक इंडिया" की आवश्यकता बढ़ रही है – अर्थात भारतीय ज्ञान दृष्टि को अपनाना।

(ग) शिक्षा के क्षेत्र में– नई शिक्षा नीति 2020 में "भारतीय ज्ञान प्रणाली" को प्रमुख स्थान दिया गया है। शिक्षा अब केवल डिग्री तक सीमित न रहकर मूल्य–आधारित और समग्र विकास की ओर बढ़ रही है।

(घ) विज्ञान और तकनीकी में – आधुनिक विज्ञान आज उस समग्र दृष्टिकोण को खोज रहा है जिसे भारत ने पहले ही स्वीकार किया था – "विज्ञान और आध्यात्म एक दूसरे के पूरक हैं।" आयुर्वेद और योग को WHO ने भी स्वास्थ्य–विज्ञान में मान्यता दी है।

21वीं सदी में भारतीय ज्ञान–परम्परा का महत्त्व

(1) पर्यावरण और सतत् विकास

भारतीय दृष्टिकोण में "संतुलन" की भावना है – प्रकृति और मनुष्य का पारस्परिक सम्मान। यही भाव आज की पर्यावरण–नीति का आधार बन सकता है।

(2) मानवता और शांति का संदेश– जब विश्व युद्ध, आतंक और स्वार्थ की राजनीति से ग्रस्त है, तब भारत का "वसुधैव कुटुम्बकम्" वैश्विक भाईचारे का प्रतीक है।

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 3.4 September-October 2025 / VOL -02 ISSUE-II

(3) नई शिक्षा नीति –भारत सरकार ने "भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS)" को विश्वविद्यालयों में शामिल किया है। यह दर्शाता है कि पारंपरिक ज्ञान अब केवल इतिहास नहीं, बल्कि भविष्य की दिशा है।

(4) स्वास्थ्य और योग का वैश्विक प्रभाव

आज योग, ध्यान और आयुर्वेद विश्व–भर में जीवन–शैली का अंग बन चुके हैं। WHO ने भी पारंपरिक चिकित्सा को स्वास्थ्य–विज्ञान का भाग माना है।

21वीं सदी की चुनौतियाँ

- युवा पीढ़ी में प्राचीन ज्ञान के प्रति अरुचि।
- अनुसंधान में भारतीय संदर्भों की कमी।
- पश्चिमी भोगवादी दृष्टिकोण ने भारतीय आध्यात्मिकता को पीछे किया है।
- पारंपरिक ग्रंथों का अध्ययन सीमित वर्ग तक रह गया है।

समकालीन चुनौतियाँ

- पश्चिमी भोगवादी संस्कृति के प्रभाव से भारतीय मूल्य–दृष्टि कमजोर हो रही है।
- पारंपरिक ग्रंथों का अध्ययन सीमित हो गया है।
- आधुनिक विज्ञान और प्राचीन दृष्टि के बीच संवाद का अभाव।
- युवा पीढ़ी का अभिरुचि–क्षय और भाषायी दूरी।

संभावनाएँ और उपाय

- भारतीय ज्ञान प्रणाली का शोध और अध्यापन – विश्वविद्यालयों में IKS केंद्र स्थापित हों।
- मूल्य–आधारित शिक्षा – केवल रोजगार नहीं, बल्कि जीवन–कौशल सिखाने वाली शिक्षा।
- वैश्विक प्रचार – योग, आयुर्वेद, संगीत और दर्शन को विश्व मंच पर प्रस्तुत करना।
- सांस्कृतिक आत्म–गौरव का निर्माण – युवा वर्ग में भारतीय चिंतन के प्रति गर्व की भावना जगाना।
- अनुवाद और डिजिटलीकरण – प्राचीन ग्रंथों को आधुनिक भाषाओं में लाना।

निष्कर्ष

भारतीय ज्ञान–परम्परा केवल अतीत की धरोहर नहीं, बल्कि भविष्य की दिशा भी है। यह परम्परा हमें सिखाती है कि ज्ञान का लक्ष्य केवल "सूचना" प्राप्त करना नहीं, बल्कि "जीवन–सार्थकता" है। 21वीं सदी में जब विश्व भौतिकता, अस्थिरता और मानसिक तनाव से गुजर रहा है, तब भारतीय ज्ञान–परम्परा संतुलन, संयम और शांति का मार्ग दिखाती है। इसलिए आज आवश्यकता है कि हम इस परम्परा को आधुनिक विज्ञान, शिक्षा और नीति–निर्माण में पुनः जीवित करें। भारतीय ज्ञान–परम्परा केवल अतीत का गौरव नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य की आवश्यकता है। इसमें जीवन को देखने की वह दृष्टि है जो विज्ञान, दर्शन, नैतिकता और पर्यावरण – सभी को जोड़ती है।

संदर्भ ग्रंथ –

1. डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन : भारतीय दर्शन, दिल्लीः ओक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1995।
2. डॉ. अखिलेश सिंह : भारतीय ज्ञान–परम्परा और शिक्षा, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, 2020।
3. नीलम यादव (संपा.) : भारतीय ज्ञान परम्परा : विविध आयाम, नई दिल्ली : भारतीय ज्ञानपीठ, 2021।
4. prabhasakshi.com (2024) : "नई शिक्षा नीति और भारतीय ज्ञान परम्परा।"
5. onlinecourses.swayam.gov.in (2023) : "Indian Knowledge Systems – Course Material
6. स्वामी विवेकानन्द : समग्र वाङ्मय, अद्वैत आश्रम, कोलकाता।
7. कौटिल्य, अर्थशास्त्र, संस्कृत संस्करण, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी।
8. प्रभासाक्षी डॉट कॉम "नई शिक्षा नीति और भारतीय ज्ञान परम्परा का समावेश", 2024।
9. जन्सत्ता डॉट कॉम "प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा समाज के लिए प्रेरणास्रोत", 2025।
10. jayvijay.com "भारतीय ज्ञान परम्परा का अर्थ और महत्त्व", 2024।

©Copyright 2024 ADRJ. All Rights Reserved